गोडसे के नाम खुली चिट्ठी

डूबती हुई हिन्दू जाति के अकेले तारनहार, आपको सहस्र बार प्रणाम है !

आप बड़े आश्चर्य में पड़ेंगे कि आपके नाम एक अनजान आदमी का यह पत्र कैसा ! आपका आश्चर्य बिलकुल स्वाभाविक है क्योंकि मैं आपके लिए बिलकुल अनजान हूँ। असल बात यह है कि मैं बहुत छोटा-सा आदमी हूँ और अगर आप मुझे नहीं जानते तो इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है। मेरा आपको यह पत्र लिखना छोटे मुँह बड़ी बात है, लेकिन मैं जानता हूँ कि आपके विषय में इस समय मेरे हृदय में जो ज्वार उठ रहा है, वह प्रचलित रीति-रिवाजों के कगार तोड़े बगैर मानेगा नहीं।

पूना से बहुत दूर एक बड़ा पवित्र तीर्थ है काशी। आपको काशी का माहात्म्य समझाने की भला क्या जरूरत। आप तो, मैं समझता हूँ, बड़े पक्के हिन्दू होंगे, दिन में कई बार संध्या करते होंगे, आपके कई मंत्रों में काशी का नाम आता होगा। इसके अलावा, आपसे ज्यादा कौन जानता होगा कि यहाँ पर आपके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बड़ा प्रताप है।

इस तरह काशी के तो अब और चार चाँद लग गये हैं। पहले वह केवल शान्तिप्रिय हिन्दुओं का तीर्थ था, अब संघर्षप्रिय हिन्दुओं का भी तीर्थ हो गया। इस बात का श्रेय आप के संघ को ही है।

इसी काशी के पास एक छोटा-सा गाँव है जिसका नाम इतना अटपटा है कि मैं उसको अपने ही तक सीमित रखना चाहता हूँ। इस अटपटे नाम के अलावा इस गाँव में अपनी कोई विशेषता नहीं—हिन्दुस्तान के सात लाख गाँवों में से ही एक गाँव यह भी है, अशिक्षा, गरीबी और आपसी लड़ाई-झगड़े का एक बड़ा-सा घूर। इस गाँव में एक प्राइमरी स्कूल है जिसमें मैं मास्टर हूँ। नंग-धड़ंग, काले-पीले, टेढ़े-सीधे पचास लड़कों को ककहरा, बारहखड़ी, ढूँचा-पवन्ना और सत्रह तक का पहाड़ा रटाना मेरा काम है। मेरा नाम जानकी प्रसाद है। यह है मेरा परिचय।

और आप? आपके परिचय की तो कोई जरूरत नहीं। अभी हाल में आपने जो महान् कार्य किया है, उसने आपके नाम को हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पहुँचा दिया है। आप तो पुलिस के कठघरे में बन्द हैं, इसलिए आपको पता न होगा कि आज हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा नाथूराम विनायक गोडसे के नामको जानता है—यह बात बिलकुल अलग है कि यह नाम लेते समय उसकी आकृति में कहीं कोई वक्रता जरूर आ जाती है, जैसे यकायक नस खिंचने का तनाव। आप का नाम लेते समय, मैंने देखा है, लोग अक्सर ऐसा मुँह बनाते हैं जैसे उनका मुँह किसी अजब विषैली घृणा से जल जाता हो, या जैसे उनके मुँह में आपका नाम नहीं परनाले का कीचड़ हो। लोग आपका नाम सुनकर थू-थू करते हैं (आप के नाम में थू है भी तो!) मगर उससे क्या, लोग तो स्वभाव से ही डाही होते हैं। आप का नाम पलक मारते देश के कोने-कोने में फैल गया, लोग इसी डाह के मारे आप से घृणा करते हैं। मैं अब यह रहस्य समझ गया। इतनी जल्दी भला किसका नाम इस विशाल महाद्वीप में फैलता है। गान्धीजी को अपना नाम दुनिया भर में फैलाने के लिए

आधी शताब्दी से ऊपर अक्लान्त कर्म करना पड़ा और आप ऐसे अक्ल-मन्द कि आपने वही काम आनन-फानन कर डाला—आखिर रिवाल्वर से चार गोलियाँ दागने में समय ही कितना लगा होगा, पलक भी तो न झपी होगी आपकी वर्ना क्या ऐसा अचूक निशाना बैठता।

अब आप का नाम एक सिल की तरह जमाने की छाती पर हमेशा-हमेशा के लिए बैठ गया। जब तक सृष्टि में गान्धी के नामलेवा रहेंगे तब तक आप का नाम भी इतिहास के पन्नों में से डंक मारता रहेगा। आज से दो या तीन या पाँच हजार साल बाद जब कोई किसी अजायब घर में गान्धीजी का अस्थि-कलश देखेगा, तब वह आपका नाम भी अवश्य लेगा। मुझे सचमुच आपसे ईर्ष्या होती है, आपने कितने सस्ते दामों में अमरता खरीद ली! ब्लैकमार्केट में और चीजें चाहे जितनी महँगी हों, अमरता तो मिट्टी के मोल (या तमंचे की चार गोलियों के मोल!) मिलती है। विश्वास कीजिए, मुझे आपसे ईर्ष्या होती है! उस समय कोई यह न कहेगा कि जिन गाँवों का उद्धार करने के लिए गान्धीजी सदा प्रयत्नशील रहे, उन्हीं में से एक गाँव में जानकीप्रसाद नाम का एक मुदर्रिस रहता था जो आदमी बुरा नहीं था, जो न तो किसी की गिरह काटता था और न किसी पर तमंचा चलाता था। इतिहास जानकीप्रसाद को भूल जायगा मगर आपको सदा याद रखेगा—एक दुःस्वप्न की ही तरह सही, मगर याद रखेगा। और हाय रे अभागा मैं, मेरा नाम मेरे साथ ही सदा के लिए मिट्टी में मिल जायगा!...मगर मैं बड़ा संतोषी जीव हूँ। सोचता हूँ, भगवान् ने मेरे भाग्य में जो कुछ लिख दिया है, उसके ऊपर उँगली उठाने का मुझे कोई हक नहीं।

एक बात आपको बताऊँ, पता नहीं आपको कैसी लगेगी। मेरे एक साथी जो कल तक नाथूराम थे, आज नाथूराम नहीं हैं। उन्होंने कल रात (कल शाम को ही खबर यहाँ मेरे गाँव में भी फैल गयी थी)

ही अपना नाम बदल दिया। मुझे उनकी यह बात कुछ समझ में नहीं आयी। मैंने उनसे कुछ खास बहस नहीं की, लेकिन जो थोड़ी बात-चीत की उससे यही पता चला कि वह इस नाम से अब डरने लगे हैं जैसे उसमें किसी भीषण महामारी के कीटाणु छिपे हों या जैसे उसमें छिपकली का-सा गिलगिला कुछ हो। मुझे तो अब विश्वास हो गया कि अब कोई माँ कभी अपने बच्चे का यह नाम न रखेगी। मुझे अफसोस यही है कि आप जिस दिन फाँसी पर टाँग दिये जायेंगे और चूहे की तरह दम तोड़ देंगे, उस दिन इस नाम का आदमी और यह नाम दुनिया के पर्दे पर से सदा के लिए मिट जायगा.....

.....मगर साँप की आँख की तरह आपका नाम सदा चमकता रहेगा।

*

मैंने आपको कभी नहीं देखा, मगर मैं आपको पहचानता हूँ। हजार आदमियों के बीच भी मैं आपको ढूँढ़ सकता हूँ। आपकी शक्ल मेरी आँखों के आगे नक्श है गो कि मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा।

∵ तमाम महाराष्ट्रों की शकल एक-सी होती है ;

∵ तमाम हत्यारों की शकल एक-सी होती है ;

∴ एक महाराष्ट्र हत्यारे की शक्ल एक ही ढंग की हो सकती है; उसमें कहीं कोई गड़बड़ी की गुंजाइश नहीं है। यों तो जैसा मैंने अभी कहा, तमाम हत्यारों की शकल एक-सी होती है। वे किसी युग में किसी देश में पैदा हों, उनकी शकल एक होती है। उनके चेहरों की गढ़न अलग-अलग होती है, मगर चेहरा एक होता है। पता नहीं, वह क्या चीज है जो उन चेहरों को एक-सा कर देती है। वह शायद बुजदिली और धोखे का एक घोल है जिसकी एक बड़ी मोटी तह तमाम हत्यारों के चेहरे पर पुती होती है।

अब आइए, आइने के सामने खड़े हो जाइए (मगर वहाँ कठघरे में आइना कहाँ,—कि है ?) मैं आपही को आप की हुलिया बतलाता हूँ।

उस घोल के नीचे (जो आपके चेहरे पर पुता है) एक बड़ी मोटी खाल है जैसी बनैले सुअर की होती है। मगर नहीं, मैं गलत कह गया। जंगली भैंसे और बनैले सुअर के संयोग से अगर कोई जानवर पैदा हो तो शायद उसकी खाल में वह बात पैदा हो जो आपकी खाल में है। मुझे लगता है कि भाला अगर आपके भोंका जाय तो उसकी नोक टूट जायगी। आपका रंग गेंहुआ होगा, गेंहुअन साँप की तरह। आपकी नाक बड़ी मोटी-सी फूली हुई होगी। आपके ओठों की मुटाई तीन चौथाई इंच से कम नहीं हो सकती। आपका सिर ऊपर से कुछ चपटा-चपटा-सा होगा, और कील की तरह ठोस। आपका कद नाटा होगा।

अगर मैंने कुछ गलत लिखा हो तो नाराज मत होइयेगा। मैं एक बहुत छोटा-सा आदमी हूँ एक गँवइया प्राइमरी स्कूल में मास्टर हूँ, गलती अगर कर जाऊँ तो माफी का हकदार हूँ। इसलिए कहता हूँ कि नाराज मत होइएगा। जवाब के साथ में अपना एक फोटो भी भेजिएगा, मैं उसे घड़ियाल के चमड़े से मढ़ाकर रखूँगा क्योंकि मैं आपके शौर्य का कायल हूँ। लोग लाख आपसे नफरत करें, आपकी बुराई करें, मैं तो सदा आपकी बहादुरी का दम भरूँगा।

अरे गोडसे की बुराई करनेवाले तंगनजर लोगो, यह कोई आसान काम नहीं है कि एक अस्सी बरस के बूढ़े को जो किसी तरह अपनी हिफाजत करने को गुनाह समझता है, जो दूसरों को भी अपनी हिफाजत नहीं करने देता क्योंकि आपके प्यार के अलावा वह और कोई कवच नहीं चाहता, एक अस्सी बरस के बूढ़े को जो सदा भीड़ में है और जिसे अपना प्राण संकट में डालने में रस आता है, जो इतना बड़ा जिद्दी, सनकी, बेवकूफ और सदियों में एक बार पैदा होनेवाला युगपुरुष है—ऐसे आदमी को

गज भर की दूरी से गोली मार दी जाय। महाराष्ट्र जाति की रगों में शिवाजी का रक्त बहता है, झाँसी की रानी और तात्या टोपे का रक्त बहता है...मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि यह हत्या कोई आसान काम नहीं है, यह मामूली आदमी के बस का रोग नहीं है। और भाई, आपने तो साहस की हद ही कर दी। आपने पहले अपने शिकार के पैर की धूल माथे पर चढ़ायी (हत्या की यह ऋचा आपने किससे सीखी ?!) और फिर दना-दन चार गोलियाँ उस बुड्ढे के शरीर में यों उँडेल दी जैसे मोटर में पेट्रोल उँडेला जाता है ! सचमुच, यह अपूर्व साहस का काम है।

मगर यों ही जिज्ञासावश एक बात पूछता हूँ—रिवालवर चलाते समय आपके हाथ नहीं काँपे तो क्या पैर की धूल लेते समय भी नहीं काँपे ?

बुड्ढे का तो अब काम तमाम करना ही था.....

...हिन्दुओं की रगों में खून नहीं पानी बहता है जो लाखों की तादाद में मौत के घाट उतारे जाकर, लाखों बहूबेटियों की इज्जत गँवाकर, अपनी आँखों के आगे मुसलमान गुण्डों के हाथों उनका सतीत्व लुटते देखकर, अपना घर-बार, माल-मता सब कुछ गँवाकर भी वे इस खूसट बुड्ढे की बकवास सुनते हैं !...(तालियाँ)

पूना में बैठे बैठे जहाँ पंजाब और उत्तर भारत की इन विपत्तियों की आँच भी नहीं पहुँची, आप जो इतने आवेशपूर्ण उत्साह में भर उठे कि वह काम कर डाला जिसके लिए किसी की हिम्मत न पड़ती थी, इससे पता चलता है कि आप सचमुच कितने भावुक प्राणी हैं। पूने की स्वास्थ्यवर्द्धक हवा में बैठकर पंजाबियों के चर्चे से अपनी नींद खराब कर लेना और फिर उन्हीं के खयाल में डूबे रहना दिखलाता है कि आप सही मानों में

लेखक हैं। मामूली लोग तो पंजाब के दर्द की कहानी एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते हैं ; यह तो आप जैसा ही आदमी था जिसे पंजाब की घटनाएँ एक मोटे बबूल के काँटे की तरह सीने में जाकर चुभ गयीं। मैं जानता हूँ, अपने पंजाबी भाइयों की हमदर्दी में आपने एक भी वक्त खाना नहीं छोड़ा क्योंकि आपको उनका बदला लेने के लिए ताक़तवर बनना था। मैं यह भी जानता हूँ कि पंजाब से भागी हुई कुछ युवतियाँ जो पूना पहुँचीं उनको आपने बिलकुल अपना बनाकर रखा और उनकी जवानी को भी प्यासी नहीं मरने दिया! उन्हीं की तकलीफों और दर्द भरी कहानियों ने आपकी नींद छीन ली और फिर आपने उनका बदला लेकर, पंजाब के हिन्दुओं और सिखों की बरबादी का बदला गान्धीजी से लेकर आपने दिखा दिया कि भारत अभी भी भौगोलिक और ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक है।

आखिर को कोई कहाँ तक उस बुड्ढे की बकवास सुनता—हिन्दुओं और मुसलमानों को मिलकर रहना चाहिए...निरी बकवास! ऐसा भी कहीं होता है। साठ पर ही अक्ल सठिया जाती है, बुड्ढा तो अब अस्सी का था। वह दिन गये जब हिंदू और मुसलमान मिलकर रहते थे। अब बना तो लिया मुसट्टों ने अपना पाकिस्तान, जाते क्यों नहीं साले वहाँ, नाहक़ क्यों पड़े हैं यहाँ? यहाँ उनके लिए जगह नहीं है। सीधे से नहीं जायेंगे तो टेढ़े से जायंगे। हिन्दुस्तान हिंदुओं का है। हम हिंदुस्तान में हिंदू राज बनायेंगे। हिंदू धर्म की जय। गान्धी पाकिस्तान का दलाल है। गान्धी मुसल्मि गुंडा है। इस युग का रावण है। उसका वध करना होगा.....

आप जो कहते हैं ठीक ही होगा। मगर मैंने अपनी आँख से जो कुछ

देखा है. अपनी छोटी अक्ल से जो कुछ समझा है, वह आप तक पहुँचाना चाहता हूँ। कुछ इस खयाल से नहीं कि आप पर उसका कुछ असर होगा, (मैं इतना भोला नहीं हूँ!) बल्कि इसलिए कि मेरा जी कुछ हलका हो जायगा।

मैंने अपने गाँव में देखा है कि गान्धी टोपी का जोर होने के पहले लोग लाल पगड़ी देखकर यों काँपते थे ज्यों साँप को देखकर मेंढक। लोग झट से खटिया पर से उठ जाते थे, बड़ी आवभगत करते थे और कान लगाकर उसकी बात सुनते थे मानों वह भगवान का भेजा हुआ दूत हो। उसे खुश रखने के लिए घी-दूध से उसकी पूजा भी करते, अकसर नकदी भी देते और अगर कोई लाल पगड़ीवाला गाँव की किसी लड़की को एक बार दाग भी लगा जाय तो उसे भी अकसर चुपचाप बर्दाश्त कर लेते या कुछ ले-देकर रफा-दफा कर देते। आपको मैं क्या बताऊँ, मूरख आदमी हूँ, गान्धी का जोर होने के पहले गाँव में लाल पगड़ी का क्या रुतबा था। यह गान्धी टोपी का ही जोर था कि गाँववालों के दिल से लाल पगड़ी का डर गया, कलक्टर और जंट-मजिस्ट्रेट का डर गया, जमींदार और सीतला कारिन्दा का डर गया.....

*

मैंने सुना है कि जब बापू के हत्यारे की खोज हो रही थी, तब आपका नाम सर्वसम्मति से पास हुआ था। आपने काम को पूरा करके दिखा दिया कि लोगों ने गलत आदमी को नहीं चुना,—आप कसौटी पर खरे उतरे!

जिस तरह आपने तीन गोलियाँ पेट में और एक छाती में मारी, उससे यह भी स्पष्ट हो गया कि आपके गुरु द्रोण ने आपको निशाना लगाना अच्छा सिखाया है।

जब से मैंने इस घटना का वृत्तान्त पत्रों में पढ़ा है, तब से मुझे लगातार लगता रहा है कि आप जरूर बड़े मनस्वी व्यक्ति होंगे। नहीं तो एक

बार भी अगर आप इस खयाल को अपने पास फटकने देते कि आखिर यह आप क्या करने जा रहे हैं, तब तो अनर्थ ही हो जाता ! आपके संघ में यह बड़ी अच्छी बात है कि सोचने का तमाम काम नेता करता है। इस सोचने से छुट्टी पा ली जाय तो सारे काम बड़ी मुस्तैदी से किये जा सकते हैं—यहाँ तक कि बापू पर बिना हाथ हिले गोली तक चलायी जा सकती है...

गान्धी को आपने गोली मार दी, अच्छा ही किया। खटिया पर मरते तो दुर्भाग्य होता। गान्धी को रणक्षेत्र में सीने में गोली मारकर आपने उसके संग कितना बड़ा उपकार किया है, इसे आप नहीं आनेवाली सदियाँ समझेंगी। गांधी को ईसा बनानेवाले आप हैं। आपकी गोली ने उसे इतिहास के महानतम शहीदों की पंक्ति में बिठा दिया। गीता के सच्चे कर्मयोगी की भाँति जीवन का एक-एक क्षण कर्म में लगे रहने के बाद अस्सी वर्ष की आयु में मिलनेवाले शहीद के पद से अधिक भाग्यशाली बात दूसरी क्या हो सकती है ?...न्याय आपको फाँसी पर लटकाएगा, लेकिन इतिहास आपका ऋण स्वीकार करेगा ! सच, मैं झूठ नहीं कहता ;—नहीं, मैं आपसे दिल्लगी नहीं कर रहा !

पुलिस के कठघरे में सुरक्षित गोडसे, आपने धूमकेतु के समान भारत के गगनमंडल में त्रास की छाया बिखेर दी है। आप नहीं जानते, आप कितने सुरक्षित हैं ! प्रकृति का आप पर यह बहुत बड़ा अनुग्रह है कि मौत एक ही बार आती है...कुछ सुना आपने, प्रकृति का आप पर यह बहुत बड़ा अनुग्रह है, बहुत बड़ा.....

···मगर मुझसे मत डरो, मैं एक दुर्बल-सा, प्राइमरी स्कूल का मास्टर हूँ।

पत्र बहुत लम्बा हो गया है। उत्तर की प्रतीक्षा अखबार में करूँगा।

...पर उधर तो देखो, फंदा तुम्हारे गले में कस जाने को कितना आतुर है?...मगर कोई मुझे यह तो बताये कि यह फंदा है या मेरी लम्बी-लम्बी गँठीली उँगलियों की सँड़सी!